2 अनूठे इन्सान

L4V8W3

इस इकाई में दो प्रसंग हैं। प्रथम प्रसंग फ्रांस के महान शासक नेपोलियन बोनापार्ट के बचपन पर आधारित है। जो हमें सत्य एवं प्रामाणिकता की राह पर चलने की प्रेरणा देता है। जबकि दूसरे प्रसंग में केरल की देशभक्त लड़की कौमुदी के 'सच्चे दान' का निरूपण है।

ऐसा था नेपोलियन

नेपोलियन जब छोटा लड़का था तभी से वह सत्यवादी था। एक दिन वह अपनी बहन इलाइज़ा के साथ आँखमिचौनी खेल रहा था। इलाइज़ा छिपी थी और नेपोलियन उसे ढूँढ़ने के लिए इधर-उधर दौड़ रहा था। अचानक वह एक लड़की से जा टकराया। लड़की अमरूद बेचने के लिए ले जा रही थी। नेपोलियन के टकराने से उसकी टोकरी नीचे गिर पड़ी। कीचड़ होने के कारण उसके सारे अमरूद खराब हो गए। वह रोती हुई कहने लगी, ''अब माँ को मैं क्या जवाब दूँगी?''

इलाइज़ा कहने लगी, ''चलो भैया, हम यहाँ से भाग चलें।''

''नहीं बहन, हमारे कारण ही तो इसकी हानि हुई है।'' यह कहकर नेपोलियन ने जेब में रखे तीन छोटे सिक्के उस लड़की को देकर कहा, ''बहन, मेरे पास ये तीन ही सिक्के हैं, तुम इन्हें ले लो।''

''इन तीन सिक्कों से क्या होगा? मेरी माँ मुझे बहुत मारेगी'', लड़की ने कहा। ''अच्छा, तो तुम हमारे साथ घर चलो, हम तुम्हें अपनी माँ से और पैसे दिलवा देंगे।''

नेपोलियन बोनापार्ट

इस पर इलाइज़ा ने नेपोलियन से कहा, ''भैया, इसे घर ले चलोगे तो माँ नाराज़ होगी।''

नेपोलियन नहीं माना। वह उस लड़की को अपने साथ घर ले गया। माँ को घटना की जानकारी देकर वह बोला, ''माँ, आप मुझे जो जेब-खर्च देती हैं, उसमें से इस लड़की को पैसे दे दीजिए।''

''ठीक है। मैं तुम्हारी सच्चाई से खुश हूँ मगर याद रखना, अब तुम्हें एक महीने तक जेब-खर्च के लिए कुछ भी नहीं मिलेगा'', माँ ने कहा।

''ठीक है माँ।'' नेपोलियन ने हँसते हुए कहा।

माँ ने उस लड़की को दो बड़े सिक्के दिए। वह खुशी-खुशी घर लौट गई। नेपोलियन को धक्का देने की सज़ा तो मिली परंतु सत्य के पथ पर चलने के कारण उसे यह सज़ा भुगतने में अद्भुत आनंद आया।

वास्तव में नेपोलियन सच्चाई के पथ पर चलनेवाला इन्सान था। बचपन से ही उसे खुद पर दृढ़ विश्वास था और दृढ़ इच्छा शक्ति भी।

★

सच्चा दान

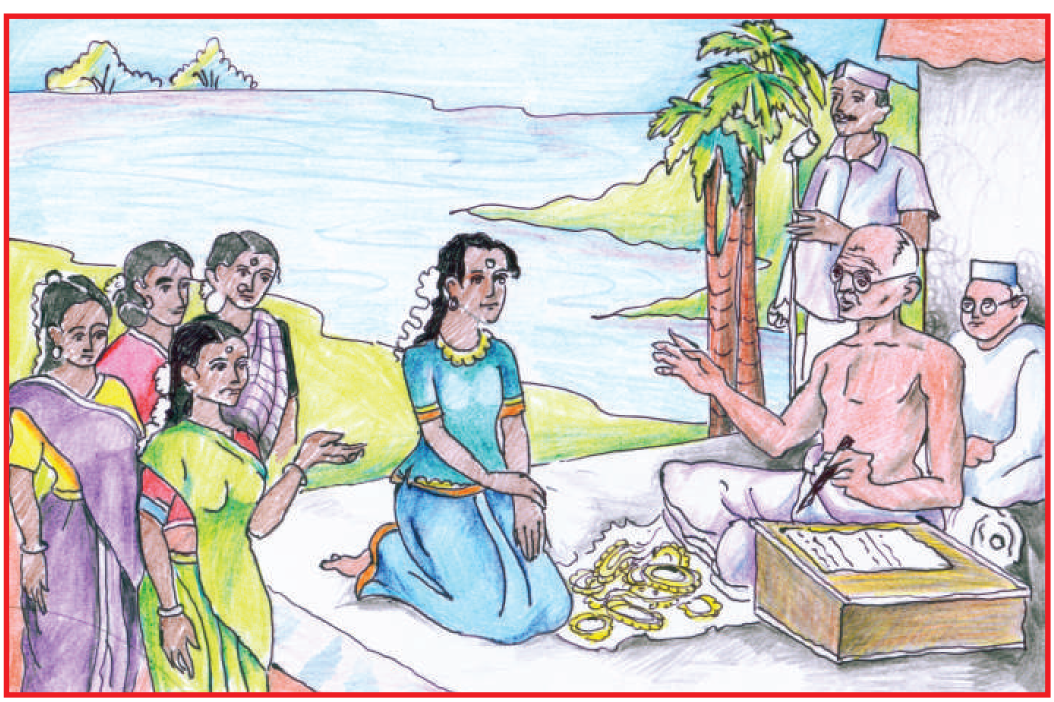

मालबार (केरल) की बात है। वहाँ बड़गरा नाम के एक गाँव में सभा का आयोजन किया गया। गाँधी जी ने अपने भाषण में सभा में उपस्थित सभी बहनों से ज़ेवरों की भीख माँगी। बहुत-सी वस्तुएँ भेंट में

मिलीं। अपना भाषण समाप्त करके गाँधी जी उनको नीलाम करने लगे। उसी समय कौमुदी नाम की 16 वर्ष की एक कन्या धीरे-से मंच पर चढ़ आई। उसने एक हाथ की सोने की चूड़ी उतारी और उसे गाँधी जी को देते हुए बोली – "क्या आप मुझे अपने हस्ताक्षर देंगे?"

गाँधी जी हस्ताक्षर कर ही रहे थे कि उसने दूसरे हाथ की चूड़ी भी उतार दी। यह देखकर गाँधी जी ने कहा – अरी, पगली लड़की, दोनों चूड़ियाँ देने की ज़रूरत नहीं है। एक ही चूड़ी लेकर मैं तुम्हें अपने हस्ताक्षर दे दूँगा।

इसके उत्तर में कौमुदी ने अपने गले का स्वर्णहार उतार लिया। गाँधी जी ने पूछा – "तुमने अपने माता-पिता से आज्ञा ले ली है न?"

बिना कोई उत्तर दिये उसने कानों में से रत्नजड़ित बुंदे भी निकाल लिए। गाँधी जी ने पूछा – तुमने इन आभूषणों को देने के लिए अपने माता-पिता से आज्ञा ले ली है न?

कौमुदी कुछ उत्तर देती, इससे पहले ही किसी ने कहा – इसके पिता तो यहीं हैं न, मानपत्रों की नीलामी में वही तो बोली लगवाकर आपकी मदद कर रहे हैं।

अब गाँधी जी ने कौमुदी से कहा – तुम्हें यह तो मालूम होगा कि ये गहने दे देने के बाद तुम फिर नए गहने नहीं बनवा सकोगी!

कौमुदी ने यह शर्त दृढ़तापूर्वक स्वीकार कर ली। गाँधी जी ने हस्ताक्षर करने के बाद यह वाक्य लिख दिया – तुम्हारे इन आभूषणों की अपेक्षा तुम्हारा त्याग ही सच्चा आभूषण है।

सच है, **देशप्रेम से बढ़कर कुछ नहीं।**

शब्दार्थ

सत्यवादी हमेशा सत्य बोलनेवाला **अद्‌भुत** अनोखा **आँखमिचौनी** लुका-छिपी का खेल **अमरूद** जामफल (गुज.) **पथ** रास्ता **दृढ़** मजबूत **निर्माता** बनानेवाला **हस्ताक्षर** दस्तख़त **घटना** प्रसंग **उपस्थित** हाजिर, वहाँ आए हुए **मानपत्र** आदर से लिखा पत्र **आयोजन** इंतज़ाम **आभूषण** गहना **नीलामी** बोली लगाकर बेचना **भाषण** सभा के सामने बोलना **त्याग** समर्पण

अभ्यास

प्रश्न 1. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) नेपोलियन और उसकी बहन के स्वभाव में क्या अंतर था?

(2) आप नेपोलियन की जगह होते तो क्या करते?

(3) आप अपने जेब खर्च का उपयोग किस प्रकार करते हैं?

(4) बापू के बारे में आप क्या जानते हैं?

(5) बापू धन क्यों इकट्ठा कर रहे थे?

(6) आपको कौमुदी का पात्र कैसा लगा? क्यों?

(7) क्या आपने भी कभी अपने माता-पिता के सामने गलती स्वीकार की है? उस घटना को अपने शब्दों में बताइए।

प्रश्न 2. उदाहरण के अनुसार संयुक्त वर्ण से बने दो-दो शब्द लिखिए :

(1) द् + ध = द्ध = शुद्ध - ...., ...

(2) त् + त = त्त = वित्त - ...., ...

(3) द् + म = द्म = पद्म - ...., ...

(4) द् + व = द्व = विद्वान - ...., ...

(5) ह् + म = ह्म = ब्रह्म - ...., ...

प्रश्न 3. निम्नलिखित विषय पर चर्चा कीजिए :

(1) महात्मा गाँधी और देशप्रेम

(2) इन्सान अनूठा कब कहलाता है?

(3) तुम अपने देश की सेवा कैसे करोगे?

प्रश्न 4. नीचे संज्ञा से बननेवाले विशेषण शब्द दिए गए हैं, उनका वाक्य में प्रयोग करके लिखिए :

(1) धर्म - धार्मिक (2) रंग - रंगीन (3) लोभ - लोभी

(4) भारत - भारतीय (5) चमक - चमकीला (6) शक्ति - शक्तिमान

(7) गुण - गुणवती (8) बल - बलवान (9) दया - दयावान

(10) दर्शन - दर्शनीय

प्रश्न 5. उदाहरण के अनुसार लिंग परिवर्तन कीजिए :

उदाहरण : पुत्र - पुत्री

(1) मेढ़क - .... (2) तरुण - .... (3) कुमार - ....

(4) देव - .... (5) हिरन - ....

उदाहरण : साँप - साँपिन

(1) कुम्हार - .... (2) नाग - .... (3) बाघ - ....

(4) धोबी - .... (5) ग्वाला - ....

उदाहरण : मोर - मोरनी

(1) शेर - .... (2) जादूगर - .... (3) मास्टर - ....

(4) डॉक्टर - .... (5) ऊँट - ....

प्रश्न 6. प्रश्न 5 में जिन शब्दों के लिंग परिवर्तन किये हैं, उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए :

जैसे –

- हिरन – हिरनी : – हिरन दौड़ रहा है।
  – हिरनी दौड़ रही है।
- पुत्र – पुत्री : – राहुल राजीव गाँधी के पुत्र हैं।
  – इन्दिरा जी जवाहरलाल जी की पुत्री थीं।

प्रश्न 7. चित्र के आधार पर चर्चा करके कहानी लिखिए :

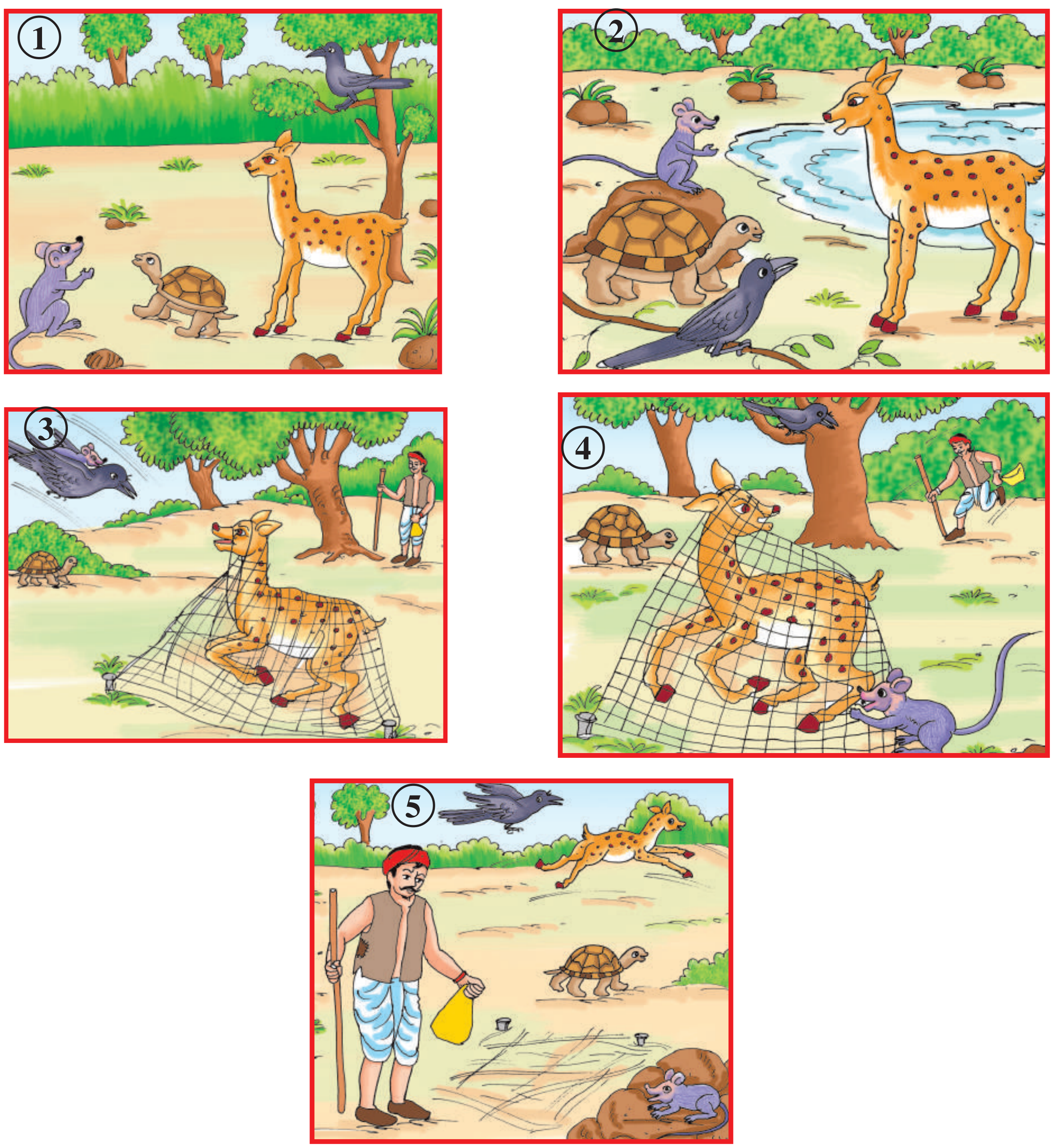

S4H3H9

स्वाध्याय

प्रश्न 1. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) नेपोलियन की बहन का नाम क्या था?
(2) नेपोलियन लड़की को अपने घर क्यों ले गया?
(3) गाँधी जी को सोने की चूड़ी देनेवाली लड़की का नाम क्या था?
(4) गाँधी जी ने कौमुदी से क्या कहा?
(5) हस्ताक्षर करने के बाद गाँधी जी ने क्या लिखा?

प्रश्न 2. (क) अपने गाँव में घटी कोई आँखों देखी घटना के बारे में लिखिए।

(ख) इस इकाई के आधार पर अपने मित्रों से पूछने के लिए पाँच प्रश्न बनाइए।

प्रश्न 3. विरामचिह्नों का उपयोग करके परिच्छेद फिर से लिखिए और अनुवाद कीजिए।

दुर्गावती बचपन से ही बहादुर थीं उन्हें युद्ध करने में अपूर्व धैर्य दूरदर्शिता अटूट साहस और स्वाभिमान जैसे गुण विरासत में मिले थे जहाँ वे सुशील कोमल अति सुंदर और भावुक थीं वहीं दूसरी ओर से वीर साहसी और अस्त्र-शस्त्र चलाने में भी निपुण थीं शिकार खेलने में उन्हें विशेष रुचि थी वे तीर और बंदूक का अचूक निशाना लगाने में भी कुशल थीं

योग्यता विस्तार

- गाँधी जी और नेपोलियन के बारे में परिचय प्राप्त कीजिए।
- महापुरुषों के जीवन की घटनाओं का संकलन कीजिए।

भाषा-सज्जता

- **आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास -**

तुम्हें छात्रावास में इसलिए भेजा था कि तुम परीक्षा में प्रथम आ सको पर तुमने तो यहाँ रहकर भी बेकार की बातों में समय बरबाद करना शुरू कर दिया।

इसे कहते हैं - 'आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास' अर्थात् अच्छा काम छोड़कर महत्त्वहीन काम में लग जाना।

- **उलटा चोर कोतवाल को डाँटे -**

एक तो तुमने चोरी की और ऊपर से मुझे ही डाँट रहे हो?

इसे कहते हैं - 'उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे' अर्थात् अपराधी द्वारा निर्दोष को धमकाना।

- **ऊँची दुकान फीका पकवान –**

हमने तो तुम्हारी दुकान की प्रसिद्धि सुनकर सामान खरीदा था मगर आपका सामान तो बहुत ही घटिया निकला।

इसे कहते हैं – 'ऊँची दुकान फीका पकवान' अर्थात् प्रसिद्धि के अनुरूप न होना।

- **एक तो करेला ऊपर से नीम चढ़ा –**

वह शराबी तो था ही, जुआ भी खेलने लगा। यह तो वही बात हुई – एक तो करेला ऊपर से नीम चढ़ा। अर्थात् एक दोष के साथ-साथ दूसरा दोष भी लग जाना।

- **एक सड़ी मछली सारे तालाब को गंदा करती है –**

जब से धनराज हमारी कक्षा में आया है उसने कई बार चोरी की है। उसकी देखा-देखी कई और लड़के भी इस लत में पड़ गए हैं। ठीक ही कहा है – एक सड़ी मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है।

अर्थात् एक की बुराई के कारण सबकी बदनामी होना।

- **कंगाली में आटा गीला –**

गंगू पहले ही बहुत निर्धन था, छोटी-सी नौकरी में बड़ी मुश्किल से गुज़ारा कर रहा था, अब तो वह भी छूट गई।

इसे कहते हैं – 'कंगाली में आटा गीला' अर्थात् मुसीबत में और मुसीबत आना।

- **कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू तेली –**

उस साधारण गायिका की तुलना लता मंगेशकर से करना उचित नहीं – कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू तेली।

अर्थात् दो व्यक्तियों की स्थिति में बहुत अंतर होना।

- **कोयले की दलाली में हाथ काला –**

उसका साथ छोड़ दो, पूरा गुंडा है, कभी तुम्हें भी ले बैठेगा। जानते नहीं, कोयले की दलाली में हाथ काला। अर्थात् बुरे के साथ रहने पर बुराई मिलती है।

- **चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए –**

सेठ मोहनदास कई दिनों से बीमार हैं, फिर भी अस्पताल नहीं जाना चाहते हैं । उनके लिए तो चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए।

अर्थात् कंजूस व्यक्ति कष्ट सहन कर लेता है, लेकिन पैसे खर्च नहीं करता।

- **जो गरजते हैं सो बरसते नहीं –**

कमल ने इस बार 100 मीटर की दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त करने का दावा किया था। वह प्रथम तो क्या, तृतीय भी न आ सका।

इसे कहते हैं – 'जो गरजते हैं सो बरसते नहीं' अर्थात् जो डींग मारते हैं, वे काम नहीं करते।

- **नाम बड़े और दर्शन छोटे –**

  तुम्हारे विद्यालय की बहुत प्रशंसा सुन रखी थी, पर आकर देखा तो पढ़ाई का स्तर कुछ भी नहीं। इसे कहते हैं – 'नाम बड़े और दर्शन छोटे' अर्थात् प्रसिद्धि अधिक किन्तु तत्त्व कुछ भी नहीं।

- **बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से पाय –**

  सारे साल तो तुमने पढ़ाई नहीं की अब उत्तीर्ण होने के सपने देख रहे हो? यह संभव नहीं है, क्योंकि किसी ने कहा है – 'बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से पाय' अर्थात् बुरे कामों का अच्छा फल नहीं मिलता।

- इन कहावतों को पढ़ने से पता चलता है कि उनमें से शाब्दिक अर्थ नहीं, बल्कि कुछ विशेष अर्थ प्रकट होता है।
- कहावत का पूर्ण वाक्य में स्वतंत्र रूप से प्रयोग किया जाता है।
- कहावत का प्रयोग किसी बात के समर्थन या खंडन के लिए किया जाता है।